संवाद दर्शन

सहयोग राशि-5/-

विक्रम संवत : 2082 | वर्ष : 2025

हिन्दी पाक्षिक

अंक : दिसंबर (द्वितीय)

बंदा बैरागी

सौर वृक्ष से पाएं 100 गुना ज्यादा सौर ऊर्जा

आज के हरित विकास और शहरी नियोजन के बदलते परिवेश में, ऊर्जा दक्षता, स्थिरता और स्मार्ट सिटी का विचार सबसे आगे हैं। इस बदलाव का सबसे उपयुक्त उत्तर सौर वृक्ष है। यह एक वृक्षनुमा सौर ऊर्जा केंद्र है। इसे भविष्य की उपयोगिता को ध्यान में रखकर विकसित किया गया है। सौर वृक्ष कम स्थान में अधिक ऊर्जा का उत्पादन करता है। यह पर्यावरण प्रेमियों के लिए एक कलात्मक प्रतीक भी है।

सौर वृक्ष वास्तव में क्या है?

सौर वृक्ष एक पेड़नुमा संरचना है, जिस पर फोटोवोल्टिक पैनल शाखाओं और पत्तियों की तरह लगे होते हैं, ताकि कम जगह में ज्यादा सौर ऊर्जा बनाई जा सके। सौर वृक्ष के बीच का खंभा तने का काम करता है, जबकि शाखाएं बाहर की ओर फैली होती हैं। इन पर सोलर पैनल (पत्तियां) लगे होते हैं। इन पेड़ों को अक्सर ऊर्जा संचय के लिए बैटरी सिस्टम, स्मार्ट लाइटिंग या इलेक्ट्रिक व्हीकल (EV) चार्जिंग यूनिट के साथ जोड़ा जाता है।

प्रकृति से प्रेरित यह डिजाइन कम जमीन घेरते हुए कई एंगल से सूरज की रोशनी को ज्यादा कुशलता से सोखने में मदद करता है, जिससे वे शहरों, पार्कों, संस्थानों, ग्रीनफील्ड प्रोजेक्ट्स और ज्यादा आबादी वाले व्यावसायिक और इलाकों के लिए आदर्श बन जाते हैं।

सौर ऊर्जा वृक्ष अपनी धुरी पर सभी सोलर पैनल के साथ घूमता है, जिससे पूरब से पश्चिम दिशा में सूरज से 10–15: ज्यादा बिजली बनती है।

मुख्य तकनीकी प्रतिस्पर्धी विशेषताएं

यह पारंपरिक SPV ले- आउट की तुलना में 100 गुना ज्यादा सोलर पावर देता है, जबकि उतनी ही बिजली के लिए 1: जमीन का इस्तेमाल होता है।
यह पैनल को ज्यादा ऊंचाई पर रखता है – जिससे ज्यादा धूप मिलती है।
SPT के ऊपर पानी के स्प्रिंकलर की सुविधा दी जा सकती है।
धान के खेत, एग्रो–गार्डन, सड़कें या पार्क भी बिना किसी खेती के काम में रुकावट डाले मेगावाट सोलर पावर बनाने के लिए इस्तेमाल किए जा सकते हैं।
यह 25% से 30% ज्यादा बिजली बना सकता है क्योंकि – सभी पैनल को दोपहर और सुबह पूरब और पश्चिम की ओर एक आसान मैकेनिज्म से 180^{0} तक घुमाया जा सकता है।

संवाद दर्शन
हिन्दी पाक्षिक

सलाहकार संपादक
देवेन्द्र मिश्र

संपादक
संजीव कुमार

प्रकाशक एवं मुद्रक
बिमल कुमार जैन

प्रिंटर्स
लोकवाणी प्रिंटिंग प्रेस,
शशि काम्प्लेक्स,
नाला रोड, कदमकुआँ
पटना

पता
विश्व संवाद केंद्र
104-105, सूर्या अपार्टमेंट,
फ्रेजर रोड, पटना - 800 001
संपर्क = 0612 2216048

ई-मेल- vskpatna@gmail.com
vskbihar@gmail.com
वेबसाइट- www.vskbihar.com

अनुक्रमणिका

जनोपयोगी ....
बोध कथा 02
सनातन साहित्य 03
दिन विशेष 05
संघ शताब्दी वर्ष... 07
अपनी हिन्दी 10
स्वास्थ्य 11
राष्ट्रीय समाचार 13
पड़ोस 15
जिहाद 16

पाठकों के नाम पत्र

प्रिय पाठक,
सादर नमस्कार।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानंद होंगे। विदित हो कि 'संवाद दर्शन' पत्रिका राष्ट्र तथा प्रदेश की घटनाओं और महत्वपूर्ण बिन्दुओं को आधार बनाकर प्रकाशित हो रही है। आपका स्नेह हमेशा प्राप्त होता रहता है। पत्रिका द्वारा सदस्यों/ पाठकों के नाम, पता, दूरभाष तथा ई–मेल में सुधार के लिए योजना चलायी जा रही है। संवाद दर्शन परिवार आशा करता है कि पत्रिका आप तक पहुंच रही होगी। यदि नहीं पहुंच रही है तो आप हमारे दूरभाष पर संपर्क कर या हमारे पते पर पत्र लिखकर अपने पता का सुधार करवा सकते हैं।

शेष शुभ!

जीवन की गाँठें

एक बार भगवान बुद्ध अपने शिष्यों को उपदेश देने के लिए आए। उनके हाथ में एक सुंदर रुमाल था। उनका इंतजार कर रहे हजारों शिष्यों को उनके हाथ में रुमाल देखकर आश्चर्य हुआ क्योंकि भगवान के हाथ में कोई चीज होना, बहुत ही असामान्य बात थी। भगवान बुद्ध उपदेश देते–देते रुमाल में गाँठें बाँधने लगे। सभी उनकी ओर आश्चर्य से देखने लगे।

रुमाल में चार– पाँच गाँठें बाँधने के बाद उन्होंने सभी से पूछा, "क्या यह वही रुमाल है, जो मैं शुरुआत में अपने साथ लाया था या उसमें कुछ बदलाव है?"

एक शिष्य ने कहा, "भगवान, रुमाल तो वही है, लेकिन उसकी स्थिति बदल गई है।''

भगवान बुद्ध ने कहा, "ठीक है, लेकिन यदि मैं चाहूँ तो क्या इस रुमाल को पहले जैसा बना सकता हूँ?"

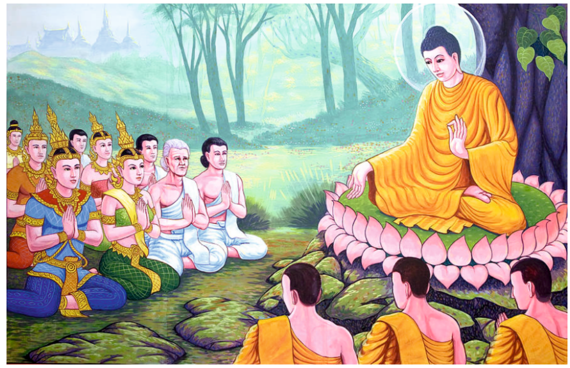

दूसरे शिष्य ने कहा, "भगवान, हाँ यह संभव है लेकिन आपको रुमाल की सभी गाँठे खोलनी पड़ेंगी।ß

भगवान बुद्ध ने पूछा, "गाँठें किस तरह खोलेंगे? रुमाल को खींचने से क्या सभी गाँठें खुल जाएँगी?"

दूसरे एक शिष्य ने कहा, "भगवान, यदि हम बारीकी से देखकर ढूँढ निकालें की गाँठ किस तरह बाँधी गयी हैं तो वे आसानी से खुल सकती हैं। लेकिन यदि हम यह नहीं पता लगाएँगे तो संभव है कि रुमाल खींचने से वे गाँठें ज्यादा मजबूत हो जाएँगी।

भगवान बुद्ध ने समझाया, "एकदम ठीक, कई बार हम अपने मित्रों और परिवार के साथ बहस और झगड़ा भी करते हैं। मैं ही सही हूँ, ऐसा आग्रह रखने से गाँठें मजबूत हो जाती हैं। और इससे अन्य लोगों के साथ भेद पड़ जाता है।

गाँठे खोलते– खोलते भगवान बुद्ध ने समझाया, "यदि हम गाँठों के कारणों का पता लगा लेंगे, दूसरों से किसी भी प्रकार की आशा नहीं रखेंगे, और गाँठों के मूल को दूर करने की कोशिश करेंगे तो हम आसानी से सभी गाँठें खोल सकेंगे। हमारे संबंध भी इस रुमाल जैसे सरल बन जाएँगे।

गर्व कीजिए अपने सनातन साहित्य पर...

(राघवयादवीयम्)

सागसा भरताय इभमाभाता मन्युमत्तया।
स अत्र मध्यमय तापे पोताय अधिगता रसा ॥ ६॥

पाप से परिपूर्ण कैकेयी पुत्र भरत के लिए क्रोधाग्नि से पागल तप रही थी। लक्ष्मी की कान्ति से उज्जवलित धरती (अयोध्या) को उस मध्यमा (मझली पत्नी) ने पापी विधि से भरत के लिए ले लिया।

सारतागधिया तापोपेता या मध्यमत्रसा।
यात्तमन्युमता भामा भयेता रभसागसा ॥ ६॥

सूक्ष्मकटि (पतले कमर वाली), अति विदुषी, सत्यभामा कृष्ण द्वारा उतावलेपन में भेदभावपूर्वक पारिजात पुष्प रुक्मिणी को देने से आहत होकर क्रोध और घृणा से भर गई।

तानवात् अपका उमाभा रामे काननद आस सा।
या लता अवृद्धसेवाका कैकेयी महद अहह ॥ १०॥

क्षीणता के कारण, लता जैसी बनी, पीतवर्णी, समस्त आनन्दों से परे कैकेयी, राम के वनगमन का कारण बन, उनके अभिषेक को अस्वीकारते हुए, वृद्ध राजा की सेवा से विमुख हो गयी।

हह दाहमयी केकैकावासेद्धवृतालया।
सा सदाननका आमेरा भामा कोपदवानता ॥ १०॥

सुमुखी (सुन्दर चहरे वाली) सत्यभामा, अत्यंत विचलित और अशांत होकर दावाग्नि (जंगल की आग) की तरह क्रोध से लाल हो अपने भवन, जो मयूरों का वास और क्रीडास्थल था, उनके कपाटों को बंद कर दिया ताकि सेविकाओं का प्रवेश अवरुद्ध हो जाए।

वरमानदसत्यासह्रीतपित्रादरात् अहो।
भास्वरः स्थिरधीरः अपहारोराः वनगामी असौ ॥ ११॥

विनम्र, आदरणीय, सत्य के त्याग से और वचन

पालन ना करने से लज्जित होने वाले, पिता के सम्मान में अद्भुत राम दृ तेजोमय, मुक्ताहारधारी, वीर, साहसी — वन को प्रस्थान किए।

सौम्यगानवरारोहापरः धीरः स्स्थिरस्वभाः।
हो दरात् अत्र आपितह्री सत्यासदनम् आर वा ॥ ११॥

संगीत की धनी, यानि सत्यभामा, के प्रति समर्पित प्रभु (कृष्ण) दृ वीर, दृढ़चित्त दृ कदाचित भय व लज्जा से आक्रांत हो सत्यभामा के निवास पंहुचे।

या नयानघधीतादा रसायाः तनया दवे।
सा गता हि वियाता ह्रीसतापा न किल ऊनाभा ॥ १२॥

अपने शरणागतों को शास्त्रोचित सद्बुद्धि देने वाली, धरती पुत्री सीता, इस लज्जाजनक कार्य से आहत, अपनी कान्ति को बिना गँवाए, वन गमन का साहस कर गईं।

भान् अलोकि न पाता सः ह्रीता या विहितागसा।
वेदयानः तया सारदात धीघनया अनया ॥ १२॥

तेजस्वी रक्षक कृष्ण — वैभवदाता, जिनका वाहन गरुड़ है दृ उनकी ओर, गूढ़ ज्ञान से परिपूर्ण सत्यभामा ने अपने को नीचा दिखाने से अपमानित, (रुक्मिणी को

पुष्प देने से) देखा ही नहीं।

रागिराधुतिगर्वादारदाहः महसा हह।
यान् अगात भरद्वाजम् आयासी दमगाहिनः ॥ १३ ॥

तामसी, उपद्रवी, दम्भी, अनियंत्रित शत्रुदल को अपने तेज से दहन करने वाले शूरवीर राम के निकट, भारद्वाज आदि संयमी ऋषि, थकान से क्लांत पँहुच याचना की।

नो हि गाम् अदसीयामाजत् व आरभत गाय न या।
हह सा आह महोदारदार्वागतिधुरा गिरा ॥ १३ ॥

सत्यभामा, अदासी पुष्पधारी कृष्ण, के शब्दों पर ना तो ध्यान ही दी ना तो कुछ बोली जब तक कि कृष्ण ने पारिजात वृक्ष को लाने का संकल्प ना लिया।

यातुराजिदभाभारं द्यां व मारुतगन्धगम्।
सः अगम् आर पदं यक्षतुंगाभः अनघयात्रया ॥ १४ ॥

असंख्य राक्षसों का नाश अपने तेजप्रताप से करनेवाले (राम), स्वर्गतुल्य सुगन्धित पवन संचारित स्थल (चित्रकूट) पर यक्षराज कुबेर तुल्य वैभव व आभा संग लिए पंहुचे।

यात्रया घनभः गातुं क्षयदं परमागसः।
गन्धगं तरुम् आव द्यां रंभाभादजिरा तु या ॥ १४ ॥

मेघवर्ण के श्रीकृष्ण, सत्यभामा को घोर अन्याय से शांत करने हेतु, अप्सराओं से शोभायमान, रम्भा जैसी सुंदरियों से चमकते आँगन, स्वर्ग को गए ताकि वे सुगन्धित पारिजात वृक्ष तक पहुँच सकें।

दण्डकां प्रदमो राजाल्या हतामयकारिहा।
सः समानवतानेनोभोग्याभः न तदा आस न ॥ १५ ॥

दंडकवन में संयमी (राम) – स्वस्थ नरेशों के शत्रु (परशुराम) को पराजित करनेवाले, मानवयोनि वाले व्यक्तियों (मनुष्यों) को अपने निष्कलंक कीर्ति से आनन्दित करनेवाले – ने प्रवेश किया।

न सदातनभोग्याभः नो नेता वनम् आस सः।
हारिकायमताहल्याजारामोदप्रकाण्डदम् ॥ १५ ॥

सदा आनंददायी जननायक श्रीकृष्ण नन्दनवन को जा पहुंचे, जो इंद्र के अतिआनंद का श्रोत था दृ वही इन्द्र जो आकर्षक काया वाली अहिल्या का प्रेमी था, जिसने (छलपूर्वक) अहिल्या की सहमति पा ली थी।

सः अरम् आरत् अनज्ञाननः वेदेराकण्ठकुंभजम्।
तं द्रुसारपटः अनागाः नानादोषविराधहा ॥ १६ ॥

वे राम शीघ्र ही महाज्ञानी – जिनकी वाणी वेद है, जिन्हें वेद कंठस्थ है – कुम्भज (मटके में जन्मने के कारण अगस्त्य ऋषि का एक अन्य नाम) के निकट जा पंहुचे। वे निर्मल वृक्ष वल्कल (छाल) परिधानधारी हैं, जो नाना दोष (पाप) वाले विराध के संहारक हैं।

हा धराविषदह नानागानाटोपरसात् द्रुतम्।
जम्भकुण्ठकराः देवेनः अज्ञानदरम् आर सः ॥ १६ ॥

हाय, वो इंद्र, पृथ्वी को जलप्रदान करने वाले, किन्नरों–गन्धर्वों के सुरीले संगीत रस का आनंद लेने वाले, देवाधिपति ने ज्यों ही जम्बासुर संहारक (कृष्ण) का आगमन सुना, वे अनजाने भय से ग्रसित हो गए।

सागमाकरपाता हाकंकेनावनतः हि सः।
न समानर्द मा अरामा लंकाराजस्वसा रतम् ॥ १७ ॥

वेदों में निपुण, सन्तों के रक्षक (राम) का गरुड़ (जटायु) ने झुक कर नमन किया जिनके प्रति अपूर्ण कामयाचना चुड़ैल, लंकेश की बहन (शूर्पणखा), को भी थी।

तं रसासु अजराकालं म आरामार्दनम् आस न।
स हितः अनवनाकेकं हाता अपारकम् आगसा ॥ १७ ॥

वे (कृष्ण) – वृद्धावस्था व मृत्यु से परे – पारिजात वृक्ष के उन्मूलन की इच्छा से गए, तब इंद्र – स्वर्ग में रहते हुए भी कृष्ण के हितैषी दृ को अपार दुःख प्राप्त हुआ।

(क्रमशः)

बंदा बैरागी का बदला

गुरु गोविंद सिंह जी महाराज अपने चारों पुत्रों के बलिदान के उपरांत यात्रा के क्रम में उज्जैन में ठहरे हुए थे। वहां उन्होंने एक दाउदपंथी संन्यासी वैरागी के बारे में सुना। लोगों के अनुसार, "उनके शरीर में कुंदन सी चमक है। उनकी कही गई बात पत्थर की लकीर है तथा उनके मठ में हजारों शिष्य हैं।"

यह सुनकर उनके मन में बैरागी के प्रति चुंबकीय आकर्षण उत्पन्न हो गया। उन्हें तो बैरागी जैसे व्यक्ति की तलाश थी, जो उनका दायां हाथ बनकर उनके अधूरे सपनों को साकार कर सके। संन्यासी बैरागी को भी इस बात की जानकारी हो गई थी कि गुरु गोविंद सिंह जी महाराज आसपास ही ठहरे हैं। उनके दर्शन के लिए बैरागी पैरों में खड़ाऊं डालकर चल पड़े। गुरु गोविंद सिंह ने बैरागी को जब अपनी ओर आते देखा तो खड़े हो गए। आपस में गले मिले। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि दोनों दो रत्न आपस में मिल रहे हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक जैसे प्रतीत हो रहे थे। बैरागी के बारे में जैसा सुना था उससे अधिक गुरु गोविंद सिंह ने पाया और समझा कि उनके अधूरे कार्य को करने में बैरागी तो योग्य और सक्षम हैं।

गुरु गोविंद सिंह जी ने पहले तो बैरागी की प्रशंसा करते हुए कहा, "तुमने वैराग्य की चरम सीमा प्राप्त कर ली है। हृदय में हिमालय सी दृढ़ता है। रक्त में वीरत्व हिलोड़े मार रहा है। अगर तुम तलवार उठा लेते हो तो तुम्हारी एक तलवार हजारों तलवार पर भारी पड़ेगी। तुम्हारे अंदर तो एक विशिष्ट प्रतिभा दबी पड़ी है।" बैरागी पूछ बैठे कि दबी प्रतिभा से आपका क्या अभिप्राय है? कृपया समझने का प्रयास करें। गुरु गोविंद सिंह जी ने कहा, "मुगलों के इस बढ़ते जुल्म और अत्याचार की घटना जान– सुनकर क्या तुम्हारा खून नहीं खौलता है? क्या तुम्हारे मन में टीस उत्पन्न नहीं होती है? क्या तुम्हारा रोम स्पंदित नहीं होता है?"

यह सुनकर बैरागी ने शांति स्वर में कहा, "अपनी कुटिया में बैठे–बैठे मैं हर छोटी–बड़ी घटना से अवगत होता रहता हूं। जिस दिन आपके दोनों पुत्रों को सरहिंद के नवाब ने दीवार में चिनवा दिया था, उस दिन तो मुझे भोजन स्वादहीन लग रहा था। रातें तारें गिनकर बिताई थी। मन कसमसा रहा था। मेरी भुजाएं तलवार उठाने के लिए फड़क रही थी। किंतु अथक प्रयास से अपने मन को संयमित किया। मेरे सामने एक यक्ष प्रश्न खड़ा हो गया कि तुम तो ठहरे संन्यासी। सच्चा संन्यासी संसार की इन सब घटनाओं से तनिक भी प्रभावित नहीं होता है। ऐसी घटनाओं से प्रभावित होना तो पुनः मोह जाल में फंसने जैसा ही है।"

बैरागी की बातें सुनकर गुरु गोविंद सिंह काफी संतुष्ट और प्रसन्न हुए। फिर समझाते हुए कहा, "यदि हर वीर और समर्थ व्यक्ति यही सोच कर मुख मोड़ ले तो फिर मुगलों का मनोबल कैसे टूटेगा? उसके दमन चक्र का चक्का कैसे थमेगा?" यह सुनकर बैरागी को एक अजीब अनुभूति हुई। उनका मन अब तलवार उठाने को उद्धत हो गया। परंतु अर्जुन की तरह उनके मन में भी एक संशय रह गया कि क्या तलवार उठाना पुनः सांसारिक बंधन में बंधने जैसा तो नहीं होगा ? उनके इस समस्या के निवारण के लिए कृष्ण की भांति गुरु गोविंद सिंह जी ने समझाया कि तपस्या तो आत्मबल का एक साधन है साध्य नहीं। उसका उपयोग निवृत्ति में नहीं अपितु कर्म मार्ग में ही है। देश– धर्म की रक्षा के लिए शस्त्र उठाना ही कर्म मार्ग है।

यह सुनकर अब बैरागी का संशय मिट चुका था। गुरु गोविंद सिंह जी ने उन्हें तलवार थमा दी। तलवार ग्रहण कर बैरागी ने कहा कि मैं सौगंध लेता हूं कि जब तक प्रतिशोध नहीं ले लूंगा तब तक चैन से नहीं बैठूंगा। आज से मैं आपका बंदा बैरागी हूं। उनका आशीर्वाद लेकर वे पंजाब की ओर प्रस्थान कर गए। उस समय उन्होंने मात्र 36 वसंत ही देखे थे। जब बंदा बैरागी पंजाब के खंडवा पहुंचे तो पूरे पंजाब में खबर फैल गई कि गुरु गोविंद सिंह जी के अधूरे काम को पूरा करने का बीड़ा एक सिद्ध पुरुष ने उठाया है। यह सुनकर वहां के युवा उनकी सेवा में शामिल होते गए।

सरहिंद के नवाब वजीर खान को एक चाटुकार ने बताया कि एक साधू पंजाब आया है, जो गुरु गोविंद सिंह जी का शिष्य है। यह सुनकर नवाब वजीर खान ने अट्टहास करते हुए कहा, ''अब तो इसकी भी ऐसी ही दुर्गति होगी कि सर न उठा सकेगा।''

सेनापति उस्मान खान के नेतृत्व में सेना की एक टुकड़ी बैरागी की सेना को कुचलने के लिए भेजी गई। मुगल सेना – अल्लाह हो अकबर के नारे के साथ रणक्षेत्र में सिख सेना से जा टकराई। परंतु मुगल सेना पर सिख सेना भारी पड़ गई। बैरागी के तीरों की वर्षा से मुगल सेना तीतर–बीतर हो गई। सेनापति उस्मान खान जो बैरागी को मारने का सपना लेकर आया था, वह भी जान बचाने के लिए भागने लगा। सिख सेना ने उस्मान खान को पकड़ लिया और उसे एक पेड़ से बांध दिया। तीरों की बौछार से उसका शरीर छलनी कर दिया गया। उसने बैरागी के चरणों में अपना दम तोड़ दिया।

अपनी सेना की यह दुर्गति और उस्मान खान के निर्मम हत्या की खबर से वजीर खान भयभीत हो गया। इस बात की जानकारी उसने दिल्ली के शासक औरंगजेब को दी। अब औरंगजेब भी चिंतित हो गया। उसने तोपों के साथ एक बड़ी सेना वजीर खान की सहायता के लिए भेजा। नवाब वजीर खान का हौसला सेना की सहायता प्रकार बुलंद हो गया वह स्वयं हाथी पर सवार होकर नेतृत्व करने चला।

भारतीय इतिहास में संवत 1765 का ज्येष्ठ मास स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। यह युद्ध गुरु पुत्रों के बलिदान का बदला चुकाने का था। तुरही बजते और नगाड़ों पर चोट पड़ते ही बैरागी की सेना 'सत श्री अकाल' के नारे लगाते मुगल सेना पर टूट पड़ी। घुड़सवार से घुड़सवार और पैदल से पैदल के बीच भीषण संग्राम हुआ। किंतु तोपों के सामने सिख सेना थोड़ा शिथिल पड़ने लगी। अब बैरागी स्वयं तोपचियों पर बाणों की वर्षा करने लगे। मुगल सेना में भगदड़ मच गई। तोपची तोप छोड़कर भागने को मजबूर हो गए। सिख सेना ने मुगल सेना को खदेड़– खदेड़ कर मारना शुरू कर दिया। बैरागी ने जब नवाब वजीर खां को हाथी पर सवार देखा तो उसकी आंखों में खून उतर आया। उसने अपने घोड़े में ऐसी ऐड़ लगाई कि वजीर खां के हाथी के पास पहुंच गया। बैरागी ने वजीर खां को ललकारते हुए कहा हिम्मत है तो उठाओ तलवार, आओ कर लो दो– दो हाथ। तुमसे तो प्रतिशोध के लिए मेरी भुजाएं वर्षों से कसमसा रही थी। मुझे तो तुमसे गुरुपुत्रों के बलिदान का बदला चुकाना है। यह सुनकर वजीर खां भय से कांपने लगा। साक्षात मौत को देखकर वह भागने लगा। किंतु सिखों ने उसे चारों तरफ से घेरकर पकड़ लिया। बंदी बनाकर उसे बंदा बैरागी के सामने लाया गया। वजीर खां का मुंह काला करके पूरे सरहिंद शहर में घुमाया गया। एक चिता सजाई गई। उसे प्रज्वलित चिता में वजीर खां को जिंदा जला दिया गया। इस प्रकार बंदा बैरागी ने अपना संकल्प पूरा किया। गुरु गोविंद सिंह जी के पुत्रों के बलिदान का बदला सूद समेत चुकाया।

(साभार : विजय पोद्दार)

समदृष्टि, क्षमता विकास एवं अनुसंधान मंडल
सक्षम
पंजीयन क्रमांक - MAH/654/2008(N)
विकलांगो के विकास हेतु समर्पित राष्ट्रीय संगठन

समदृष्टि क्षमता विकास एवं अनुसंधान मंडल (सक्षम)

प्रांत अधिवेशन में उपस्थित प्रतिनिधि

दिव्यांग–मित्र प्रमाण–पत्र का लोकार्पण करते अतिथि

प्रांत अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए मु. अतिथि श्री कमलेश कु. पाण्डेय

प्रांत प्रशिक्षण वर्ग को संबोधित करते हुए
राष्ट्रीय महासचिव श्री कमला कान्त पाण्डेय जी

संबोधित करते हुए क्षेत्र
सम्पर्क प्रमुख श्री अनिल ठाकुर जी

प्रांत प्रशिक्षण वर्ग में उपस्थित कार्यकर्त्ता

दिव्यांगजनों को अवसर दें ,दया का पात्र न समझें....

सार्थकता सक्षम की

– आशुतोष पाण्डेय

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का शताब्दी वर्ष केवल संगठन की काल–यात्रा का उत्सव नहीं, बल्कि भारतीय समाज के उत्स का अवसर भी है। 1925 में स्थापित यह संगठन आज एक विराट वटवृक्ष के रूप में खड़ा है, जिसकी शाखाएँ समाज के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को अनुप्राणित कर रही है। शिक्षा, स्वास्थ्य, समाज सेवा, ग्राम विकास, महिला सशक्तिकरण और राष्ट्रचेतना के विविध उपक्रमों में स्वयंसेवकों की सक्रिय भूमिका रही है। इसी क्रम में दिव्यांगजन कल्याण के लिए स्थापित 'सक्षम' (समदृष्टि, क्षमता विकास एवं अनुसंधान मंडल) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का एक महत्त्वपूर्ण आनुषंगिक संगठन है। सक्षम ने यह सिद्ध किया है कि दिव्यांगता शारीरिक सीमाओं की जकड़न मात्र है, किंतु आत्मबल, समाज का सहयोग और संगठनात्मक प्रेरणा से दिव्यांगजन भी राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

संघ की स्थापना काल से ही यह विचार स्पष्ट रहा है कि भारत का उत्थान तभी संभव है, जब समाज का प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्र के साथ अपने को जोड़कर देखे। परम पूज्य श्री गुरुजी ने कहा था –"राष्ट्र की सेवा ही परम धर्म है।" इसी सेवा की परंपरा में सेवा भारती, विद्या भारती, वनवासी कल्याण आश्रम और दिव्यांगजन हेतु सक्षम जैसी संस्थाएँ जन्म लेती रही हैं।

भारतीय परंपरा में सेवा का विचार गहराई से रचा–बसा है। "परोपकारार्थं इदं शरीरं "(यह शरीर दूसरों के उपकार के लिए है)'' यह संस्कृत वचन केवल उपदेश नहीं, बल्कि हमारा आचरण रहा है। संघ का शताब्दी वर्ष इस ध्येय को पुनः पुष्ट करता है कि समाज के सबसे उपेक्षित वर्ग तक पहुँचकर उसे आत्मनिर्भर बनाना ही सच्ची सेवा है।

दिव्यांगजन समाज की संवेदनशील श्रेणी हैं। आज भारत में लगभग 3 करोड़ दिव्यांगजन हैं। इनमें से अधिकांश गरीबी, उपेक्षा और अवसरों की

कमी के कारण अपने सामर्थ्य का प्रयोग नहीं कर पाते। इसी पीड़ा को ध्यान में रखते हुए जून, 2008 में संघ के स्वयंसेवकों ने 'सक्षम' संगठन की स्थापना की। इसका उद्देश्य स्पष्ट था– दिव्यांगों के जीवन में आत्मविश्वास का संचार करना। उन्हें कौशल, शिक्षा और रोजगार से जोड़ना तथा तकनीकी नवाचारों के माध्यम से उनकी जीवनयात्रा को सहज बनाना है।

सक्षम के उपक्रमों में ब्रेल पुस्तकालय, दृष्टिबाधित छात्रों के लिए डिजिटल लर्निंग, श्रवण बाधितों हेतु विशेष प्रशिक्षण और शारीरिक रूप से दिव्यांग युवाओं के लिए स्वरोजगार कार्यक्रम प्रमुख हैं। संगठन का प्रयास केवल दान या सहायता तक सीमित नहीं है, बल्कि आत्मनिर्भरता पर केंद्रित है। सक्षम का नारा है–"दिव्यांग नहीं, दिव्य–अंग"।

भारतीय संस्कृति ने कभी दिव्यांगों को सहानुभूति का पात्र नहीं माना, बल्कि उन्हें अद्भुत मनीषा और प्रतिभा से विभूषित किया है। महाकवि सूरदास इसका सर्वोत्तम उदाहरण हैं। नेत्रहीन होकर भी उन्होंने कृष्ण भक्ति की अमर धारा बहाई और हिंदी साहित्य को अनुपम काव्य–रत्न दिए। तुलसीदास ने उनके बारे में लिखा– "सूरदास जस अंध होंहि, देखत हरि के रूप।"

संस्कृत वाङ्मय में दिव्यांगता को केवल शारीरिक कमी नहीं, बल्कि आत्मबल की कसौटी माना गया है।

**"न शरीरं प्रधानं पुरुषे, न च दुर्बलता कारणम्।
मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः॥"**

अर्थात मनुष्य में शरीर प्रधान नहीं होता, न ही दुर्बलता उसका भाग्य निर्धारित करती है। मन ही बंधन और मुक्ति का कारण है।

स्वतंत्र भारत ने भी अनेक ऐसे दिव्यांग महापुरुष देखे, जिन्होंने अपनी उपलब्धियों से यह सिद्ध किया कि सीमाएँ केवल मन में होती हैं। ऐसे महापुरुषों में **डॉ. जयंत नार्लीकर**– प्रसिद्ध खगोलशास्त्री, श्रवण बाधित होकर भी उन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में अद्भुत योगदान दिया।

गिरिश शर्मा एक हाथ से विकलांग होने के बावजूद राष्ट्रीय बैडमिंटन खिलाड़ी बने।

सुधा चंद्रन– कृत्रिम पैर के सहारे भी शास्त्रीय नृत्य की विलक्षण साधना कर समाज के लिए प्रेरणा बनीं।

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि यदि अवसर, साधन और प्रोत्साहन मिले, तो दिव्यांगजन किसी भी क्षेत्र में राष्ट्र का गौरव बन सकते हैं।

भारत 'विश्वगुरु' तभी बन सकता है जब प्रत्येक नागरिक, चाहे वह शारीरिक रूप से सक्षम हो या दिव्यांग, राष्ट्र की प्रगति में सहभागी बने। सक्षम इस दिशा में एक सेतु का कार्य कर रहा है। यह संगठन केवल दिव्यांगजन को ही नहीं, बल्कि समाज को भी जागरूक करता है कि दिव्यांगता कोई दया या बोझ की स्थिति नहीं है। हर व्यक्ति में ईश्वर की अद्भुत क्षमता है, जिसे पहचानने और विकसित करने की आवश्यकता है।

समाज की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है दिव्यांगजनों को समान अवसर और गरिमा प्रदान किया जाए। आज भी अनेक स्थानों पर दिव्यांगजन शिक्षा, रोजगार और सामाजिक अवसरों से वंचित हैं। यह स्थिति केवल सरकारी

नीतियों से नहीं बदल सकती, बल्कि समाज की सोच और आचरण में परिवर्तन आवश्यक है।

संघ और सक्षम ने इस दिशा में आदर्श प्रस्तुत किया है। स्वयंसेवकों ने गाँव–गाँव जाकर दिव्यांग बच्चों को शिक्षा से जोड़ा, उनके लिए ब्रेल ग्रंथालय स्थापित किए तथा स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण शिविर लगाए। यह सेवा निस्संदेह अनुकरणीय है।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत ॥"

अर्थात सब सुखी हों, सब निरोगी हों, सब मंगल देखें, कोई दुखी न हो। परंतु यह प्रार्थना तभी सार्थक होगी, जब दिव्यांग जन भी समाज के मुख्य प्रवाह में शामिल हों।

संघ का शताब्दी वर्ष केवल अतीत की उपलब्धियों का गौरव– गान नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा का उद्घोष है। इस अवसर पर हमें यह संकल्प लेना होगा कि दिव्यांगजन को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना हमारी साझा जिम्मेदारी है। सक्षम जैसे संगठन इस दिशा में अद्वितीय कार्य कर रहे हैं, किंतु उनकी सफलता तभी होगी जब समाज का प्रत्येक वर्ग इस प्रयास में सहभागी बने।

आधुनिक दिव्यांग मनीषियों की प्रेरणा हमें बताती है कि दिव्यांगता बाधा नहीं, बल्कि अवसर है। अवसर आत्मबल को जगाने का, अवसर समाज को संवेदनशील बनाने का तथा राष्ट्र को और अधिक समावेशी बनाने का।

संघ के शताब्दी वर्ष का यही सच्चा संदेश है। "दिव्यांग नहीं, दिव्य अंग और प्रत्येक अंग से सशक्त भारत।" भाग्य निर्धारित करती है। मन ही बंधन और मुक्ति का कारण है।

जमुई में दिव्यांगजनों को सहायक उपकरण वितरण करते अतिथि

मुंगेर जिला में विश्व दिव्यांग दिवस को सम्बोधित करते अतिथि

सक्षम :- "सक्षम भारत - समर्थ भारत"

सक्षम के प्रकोष्ठ

1. दृष्टि – नेत्र जनित
2. चरैवती – अस्थि जनित
3. सविता – कुष्ठ जनित
4. प्राणदा – रक्त जनित
5. धीमहि – बौद्धिक जनित
6. प्रणव – श्रवण जनित
7. चेतना – मानसिक जनित

सक्षम के कार्यक्रम

1. स्थापना दिवस कार्यक्रम - 20 जून
2. रक्षाबंधन कार्यक्रम
3. नेत्रदान जागरुकता पखवाड़ा- 25 अगस्त से 8 सितंबर
4. अष्टावक्र जयंती - 23 सितंबर
5. विश्व दिव्यांग दिवस - 3 दिसंबर

(डॉ. कांत मनु चौरसिया)

अवलोकन, पुनरवलोकन, विलोकन, सिंहावलोकन और विहंगावलोकन में अंतर

अवलोकन का अर्थ है– देखना जिसमें 'अव' उपसर्ग का अर्थ नीचे, हीन आदि है। निकट अथवा नीचे रखी वस्तु, जैसे पुस्तक आदि का अवलोकन किया जाता है।

किसी चीज को दुबारा देखने के लिए **'पुनरवलोकन'** शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसे अज्ञानवश 'पुनरावलोकन' लिख दिया जाता है। अवलोकन में 'पुनर्'(अर्थ – दुबारा) उपसर्ग लगकर 'पुनरवलोकन' शब्द बनेगा, न कि पुनरावलोकन।

'विलोकन' का अर्थ है– विशेष रूप से या अच्छी तरह देखना, जिसमें 'वि' उपसर्ग विशेष का द्योतक है। अगर दुबारा अच्छी तरह देखना हो, तो उसके लिए शब्द हैदृ पुनर्विलोकन (पुनरविलोकन अशुद्ध है।)। हम जानते हैं कि न्यायिक प्रक्रिया में पुनर्विलोकन याचिका के अंतर्गत दुबारा अच्छी तरह मामले को देखने का अनुरोध किया जाता है।

विहंगावलोकन का अर्थ हैदृ विहंग या पक्षी की भाँति पैनी निगाह से देखना। आसमान की ऊँचाई में उड़ रहा एक पक्षी जमीन पर गिरे अनाज के एक दाने को भी देख लेता है। इसी से शब्द बना 'विहंगम–दृष्टि'। स्पष्ट है कि विहंगावलोकन में सूक्ष्म और पैनी–दृष्टि अपेक्षित होती है।

सिंहावलोकन शब्द बना है– 'सिंह . अवलोकन' से। सिंह जब चलता है तो थोड़ी–थोड़ी देर बाद गर्दन घुमा कर पीछे देखता है कि सब ठीक तो है। गर्वित वनराज का पलट कर देखना आत्मविश्वास से पूर्ण होता है। लेकिन इसमें सूक्ष्म नहीं, अपितु व्यापक दृष्टि होती है। पता होता है कि सब ठीक ही हैय तथापि पीछे मुड़कर एक बार सुनिश्चित किया जाता हैं।

विशेष – दृष्टि शब्द की व्युत्पत्ति 'दृश' धातु से है। 'दृश' धातु का अर्थ है– देखना, अवलोकन करना, नजर डालना, निरीक्षण करना, निहारना, दृष्टिगोचर करना, खोज करना, दर्शन करना इत्यादि। आँख को 'दृशा' और 'दृशी' भी कहा जाता है, क्योंकि यह देखने के काम आती है। जो देखने में मदद करे, ऐसे गुरु को 'दृशान' कहा जाता है। जो 'दृश' अर्थात् देखने के योग्य हो, वह 'दृश्य' कहलाता है। जो देख लिया गया, वह 'दृष्ट'। दृष्टि से देखने की शक्ति, समीक्षण आदि का अर्थ मिलता है।

(साभार : कमल की कलम से)

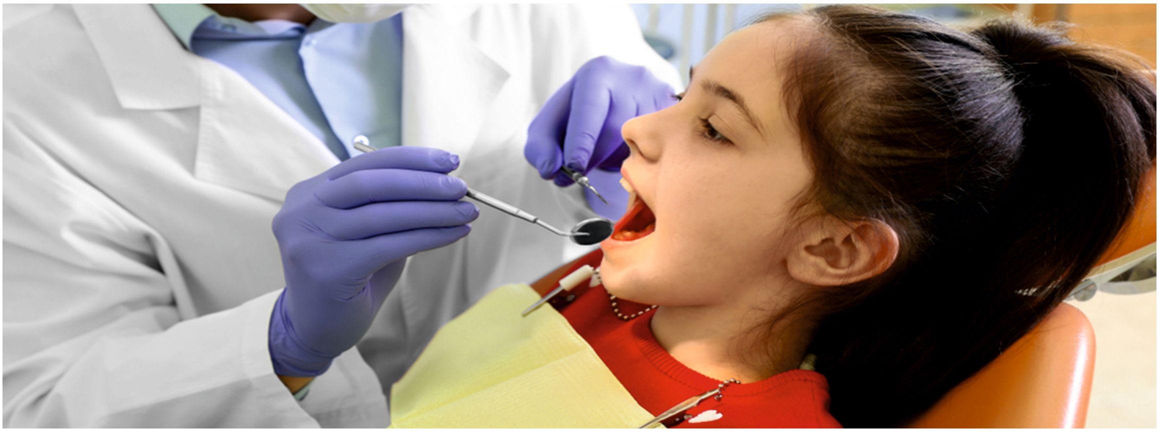

दंत स्वास्थ्य और जागरूकता

दाँत केवल भोजन चबाने का साधन नहीं, बल्कि पूरे शरीर के स्वास्थ्य और व्यक्तित्व का आधार हैं। सही जानकारी, सही आदतें और सही समय पर उपचारकृये तीन बातें किसी भी व्यक्ति की मुस्कान और स्वास्थ्य दोनों को सुरक्षित रख सकती हैं।

सावधानियाँ, सही जानकारी और विशेषज्ञ की सलाह

दाँतों की समस्याएँ अक्सर धीरे–धीरे बढ़ती हैं और जब तक दर्द असहनीय न हो जाए, लोग डॉक्टर के पास नहीं पहुँचते। मसूड़ों से खून आना, दाँत में कीड़ा लगना, मुँह से बदबू, तंबाकू से हुए घाव या बच्चों के दाँत कमजोर होना – ये सभी समस्याएँ समय पर ध्यान न देने से गंभीर रूप ले लेती हैं। ऐसे में जरूरी है कि लोग दंत स्वास्थ्य को लेकर सही जानकारी रखें और समय पर जरूरी सावधानियाँ अपनाएँ, ताकि आने वाले समय में बड़ी परेशानी से बचा जा सके।

दाँत दर्द को हल्के में न लें

दाँत का दर्द किसी छिपी हुई समस्या का संकेत होता है।

- दर्द की असली वजह अक्सर कैविटी, पायरिया, दाँत की नस में संक्रमण या मसूड़ों की बीमारी होती है।
- दर्द होने पर सिर्फ दर्दनाशक दवा खाने से कुछ समय राहत मिलती है, लेकिन समस्या बढ़ती रहती है।
- देर न करें और सही समय पर डॉक्टर से जांच कराएँ।

गलत तरीके से साफ किए गए दाँत समस्या बढ़ाते हैं

बरसों से चली आ रही कुछ आदतें जैसे–नीम की दातुन से दांतों को जोर–जोर से रगड़ना, नमक–सरसों का पाउडर, कोयला या रगड़ने वाले पेस्ट–दंत परत को नुकसान पहुँचा सकते हैं। बहुत जोर से ब्रश करने से मसूड़े कमजोर होते हैं।

- गीले या नमी भरे मुँह में बैक्टीरिया तेजी से बढ़ते हैं।
- सही तरीका है–नरम ब्रश, हल्के हाथ और फ्लोराइड युक्त पेस्ट।

स्केलिंग से दाँत कमजोर नहीं होते

अधिकांश लोग यह मानते हैं कि दाँत की सफाई (स्केलिंग) से दाँत ढीले हो जाते हैं, जबकि यह एक भ्रम है।

- स्केलिंग सिर्फ दाँतों पर जमे मैल और पथरी को हटाता है।

- पायरिया, बदबू और खून आने की समस्या स्केलिंग से ही ठीक होती है।
- यह दाँतों को मजबूत और मसूड़ों को स्वस्थ बनाता है।

तंबाकू और गुटखा सबसे बड़ा खतरा

तंबाकू से जुड़े उत्पाद दाँतों को धीरे–धीरे नष्ट कर देते हैं। मुँह का कैंसर,मसूड़ों का गलना,दाँतों का काला होना,मुँह का कम खुलना, दाँत तेजी से हिलना– ये सभी गंभीर समस्याएँ तंबाकू की ओर इशारा करती हैं। जितनी जल्दी इसे छोड़ा जाए, उतना बेहतर।

- बच्चों के दाँतों को विशेष देखभाल की जरूरत
- बच्चों की मिठाई और पैक्ड स्नैक्स खाने की आदत उनके दाँतों को जल्दी प्रभावित करती है।
- उन्हें फ्लोराइड युक्त पेस्ट दें।
- रात में ब्रश जरूर कराएँ।
- दूध, दही, हरी सब्जियाँ और कैल्शियम युक्त भोजन दें।
- उनके दाँत हर 6 महीने में दिखाते रहें।
- खाने–पीने की सही आदतें दाँतों को स्वस्थ रखती हैं।
- मीठा खाने के बाद दाँत जरूर साफ करें या मुँह धोएँ।
- नाश्ता छोड़कर बाहर जाने की आदत दाँतों और पेट दोनों के लिए हानिकारक है।
- गुनगुना पानी पिएँ–यह मुँह के लिए भी बेहतर है।
- बहुत ज्यादा चाय–काफी दाँतों को पीला करती है।

धूप और स्वच्छता का महत्व

- धूप में बैठना न सिर्फ शरीर बल्कि दाँतों के लिए भी लाभकारी है।
- विटामिन डी मसूड़ों और हड्डियों को मजबूत बनाता है।
- प्रतिदिन 15–20 मिनट धूप जरूर लें।
- पानी हमेशा साफ रखें और गुनगुना पानी पीने की आदत डालें।

मुँह से बदबू या खून आने को नजरअंदाज न करें इन संकेतों को प्रारंभिक चरण में पकड़ लेना बहुत जरूरी है–

- बार–बार खून आना
- मुँह से दुर्गंध
- दाँत ढीले पड़ना
- मुँह में सफेद या लाल चकत्ते जैसे
- इनमें कोई भी लक्षण दिखे तो तुरंत जांच कराएँ।

सही टूथपेस्ट और सही तकनीक का उपयोग करें

- पायरिया के लिए एंटीसेप्टिक पेस्ट
- कैविटी के लिए फ्लोराइड
- संवेदनशील दाँत के लिए सेंसिटिव पेस्ट
- विज्ञापन नहीं–अपनी समस्या के अनुसार चुनाव करें।

हर 6 महीने में नियमित जांच कराना जरूरी दंत चिकित्सकों के अनुसार

- दाँतों की बीमारी शुरुआत में पता चल जाए तो इलाज सरल और कम खर्चीला होता है।
- गंभीर बीमारी बनने से पहले रोकथाम ही सबसे बड़ा उपाय है।

इसलिए 6 महीने में एक बार जांच कराना जीवन भर दाँतों को सुरक्षित रखता है।

आने वाले समय में दंत स्वास्थ्य पर ध्यान और बढ़ाना होगा

लोगों में जंक फूड, तंबाकू, मीठे पेय और अनियमित जीवनशैली बढ़ रही है।

- इस कारण दाँतों की समस्याएँ पहले की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ रही हैं।
- बच्चों और युवाओं में कैविटी का जोखिम बढ़ गया है।
- मसूड़ों की बीमारी अब सिर्फ बुजुर्गों की समस्या नहीं।

इसलिए जागरूकता, सही आदतें और नियमित जांच–ये तीनों आने वाले वर्षों में अत्यंत महत्वपूर्ण होंगे।

(पत्रकार दीपशिखा से बातचीत पर आधारित)

साहित्य लिखने वाले शब्द–सृष्टि के ईश्वर हैं – डॉ. मोहन भागवत जी

नागपुर पुस्तक महोत्सव में 'भारत बोध' शीर्षक के तहत आयोजित युवा लेखक संवाद में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि लेखन एक प्रतिभा है, वह सबके पास नहीं होती। शब्द भाव प्रवाहित करते हैं। सामने वाले के मन में परिवर्तन लाने वाला, प्रभावी परिणाम करने वाला भाव पहुंचाना, यह साहित्य है। साहित्य जीवनभर रहता है और हितकारी होता है। साहित्य मनुष्य जीवन को उन्नत और सच्चा मनुष्य बनाता है। पढ़ा–लिखा आदमी अधिक सुसंस्कृत है, ऐसा माना जाता है। साहित्य लिखने वालों का मनुष्य पर उपकार है। एक अर्थ से साहित्य लिखने वाले शब्द सृष्टि के ईश्वर हैं। और वह शब्द सृष्टि में जो भी करेंगे, वह मंगल ही होगा, हितकारी ही होगा, ऐसी श्रद्धा आज भी जनमानस में है। इसलिये लेखकों को इसका ध्यान रखकर लिखना चाहिए।

इस दौरान मंच पर नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रो. मिलिंद मराठे और जीरो माईल फाऊंडेशन के अध्यक्ष प्रशांत कुकडे उपस्थित थे।

सरसंघचालक जी ने कहा कि यश का मापदंड लगाकर देखें तो दुनिया में बहुतांश लोग अयशस्वी हैं, उनका संपूर्ण बहुमत है। चमकने वाले थोड़े

रहते हैं। लेकिन हर आदमी उस रास्ते पर रहता है। आदमी अपनी गलतियों से सीख लेकर आगे बढ़ता रहे तो वह एक दिन चमकने वाला बन जाएगा। परंतु यश थोड़े लोगों का और तात्कालिक होता है। अपना जीवन किसी काम में आ गया, उस का कुछ उपयोग हुआ, ये बात सार्थकता की है और यश कदाचित तात्कालिक आनंद देता होगा, सार्थकता पूरे जीवन में संपूर्ण समाधान उत्पन्न करने वाली होती है।

उन्होंने कहा कि ज्ञान साहित्य से मिलता है। बोला हुआ सुनते हैं, लिखा हुआ पढ़ते हैं और जिया हुआ देखते हैं। साहित्य सृजनता, लेखक का गुणधर्म है। उसके मन में भाव उत्पन्न होते हैं, उसके निरीक्षण से उन भावों को वो अक्षरों से कागज पर व्यक्त करता है।

लेखक जो लिख रहे हैं मनुष्यता की दृष्टि से ठीक है कि नहीं, शब्द का प्रयोग ठीक है या नहीं, इसे देखने की आवश्यकता है। भारत की बातों का भाव ठीक से पहुंचाने वाले शब्द अंग्रेजी में नहीं हैं। वैसे ही विदेशी भाषा के भाव भी भारतीय भाषा में नहीं आ सकते। इसलिए जिस भाषा में लिखते हैं, उस भाषा में भाव पहुंचाना यह बड़ी महत्त्व की बात है।

मोहन भागवत जी ने कहा कि हम समाज में काम करते हैं, लोग हमें राष्ट्रवादी कहते हैं। लेकिन हम कभी वाद नहीं करते, विवाद से दूर रहते हैं। बहार के देशों को विवाद, संघर्ष करना पड़ा, इसलिए वहां यह 'इज्म' शब्द आया। उनकी नेशन की कल्पना भिन्न है। उन्होंने राष्ट्र को नेशन और राष्ट्र–वाद को नेशनलिज्म बना दिया। हमारे यहां राष्ट्र वाद का विषय है ही नहीं। हमारा राष्ट्र प्राचीन काल से है। हम राष्ट्रीयता, नेशनलिटी या नेशनहुड कहते हैं। राष्ट्रत्व भी हो सकता है। आप अपने लेखन में नेशन शब्द से राष्ट्र का भाव पहुंचाने की कोशिश करोगे तो हमें अपेक्षित भाव नहीं मिलेगा।

आर्टिफिशियल इंटेलिजन्स पर सरसंघचालक जी ने कहा कि हमने स्वयं को यंत्र नहीं बनाना है। टेक्नोलॉजी है वह आएगी ही। लेकिन आने के बाद भी मालिक हम बने रहें, नियंत्रण हमारा रहे। हम अपनी इच्छा से उसका उपयोग करें। यह साधन है, उनका जनकल्याण के लिए उपयोग करना चाहिए। एआई का उपयोग मानव हित के लिए करना पड़ेगा। एआई के कारण मनुष्य की भावनाओं का क्या, ऐसा डर लगता है, लेकिन वह एआई अभी आया नहीं है। वो आने के पहले हम तैयार हो जाएं और उसका मालिक बनने की तैयारी करें।

भारतीय और आधुनिक शिक्षा पर उन्होंने कहा कि आज फिनलैंड में मिलने वाली शिक्षा अच्छी है। वहां के विद्यार्थी अव्वल रहते हैं। उनको स्पर्धा में रुचि नहीं है। वे विद्यार्थियों को शिक्षा देकर संघर्ष के लिए तैयार करते हैं। शाश्वत और हितकारक शिक्षित व्यक्ति को दर– दर भटकना ना पड़े। शिक्षा से संस्कार मिले, सुसंस्कृत हो। शिक्षा सबके लिए सुलभ और सस्ती होनी चाहिए और वह विद्यार्थियों तक पहुंचनी चाहिए।

ग्लोबलाइजेशन पर उन्होंने कहा कि यह गलत संकल्पना है। विश्व के सारे देश, सारा समाज एक जैसा नहीं हो सकता। भिन्न–भिन्न परिस्थिति अनुसार वहां के प्रश्न और उसके समाधान की व्यवस्था अलग– अलग होती है। लेकिन सारे विश्व के बारे में एक कुटुंब का भाव रखकर हम चल सकते हैं। वसुधैव कुटुंबकम् यह हमारी प्राचीन धारणा रही है जो ग्लोबलाइजेशन से अलग और बेहतर है।

जेन जेड को संदेश देते हुए उन्होंने कहा कि वे अपनी परम्परा, अपना इतिहास मूल रूप में समझ लें। विकिपीडिया पर निर्भर रहकर किसी निष्कर्ष पर पहुंचना गलत होगा। अपनी संस्कृति में परंपरा आंख मूंदकर नहीं अपनाई जाती। अपनी परम्परा परिवर्तनीय है। वह कैसे विकसित हुई, इसका हम तर्कशुद्ध तरीके से अभ्यास करेंगे तो यह पीढ़ी परम्परा को और समृद्ध बनाकर आगे ले जा सकती है।

बांग्लादेश में लक्षित हिंसा के शिकार होते हिंदू और पत्रकार

बांग्लादेश में भीड़ तंत्र से निपटने के लिए कोई कारगर नीति नहीं है। लिहाजा हर छोटी बड़ी घटनाओं पर भीड़ हिंसक हो जाती है और उसका सबसे आसान शिकार हिंदू और पत्रकार होते हैं।

बांग्लादेश के मैमनसिंह जिले के भालुका में 18 दिसंबर की रात एक हिंदू युवक दीपू चंद्र दास की उग्र भीड़ ने पीट–पीटकर हत्या कर दी। यह घटना रात करीब 9:15 बजे पायनियर निटवेयर्स फैक्ट्री के सामने हुई। मिल मजदूर दीपू पर पैगंबर मोहम्मद साहब के बारे में अपमानजनक टिप्पणी करने का आरोप लगा था। गुस्साई भीड़ ने फैक्ट्री का गेट तोड़ दिया और अंदर मौजूद दीपू को बाहर खींच लिया। भीड़ ने उसे बेरहमी से पीटना शुरू कर दिया। मौके पर मौजूद पुलिस की टीम ने भीड़ को रोकने की कोशिश की लेकिन प्रदर्शनकारियों ने उन पर हमला कर दिया। पुलिस को आत्मरक्षा में वहां से भागना पड़ा। भीड़ के हिंसक हमले की वजह से दीपू चंद्र दास की मौके पर ही मौत हो गई।

भीड़ को इतने पर भी संतोष नहीं हुआ तो हत्या के बाद मृतक के शव को नग्न अवस्था में घसीटते हुए ढाका– मैमनसिंह हाईवे को पूरी तरह बंद कर दिया। भीड़ ने शव को सड़क के बीच लगे डिवाइडर के पेड़ से लटका दिया। वहां मौजूद हजारों लोगों ने करीब 2 घंटे तक जश्न मनाया। भीड़ लगातार नारेबाजी कर रही थी। रात करीब 11:15 बजे प्रदर्शनकारियों ने लटके हुए शव पर मिट्टी का तेल छिड़का और उसे आग के हवाले कर दिया।

उस्मान हादी की मृत्यु की घोषणा के बाद बांग्लादेश के मीडिया को भी निशाने पर लिया गया और हमलावरों के एक समूह ने 'प्रोथोम आलो' और 'द डेली स्टार' के कार्यालयों में तोड़फोड़ की और आग लगा दी।

ढाका के कारवान बाजार स्थित प्रोथोम आलो की चार मंजिला इमारत पूरी तरह जलकर ख़ाक हो गई। वहीं डेली स्टार के ऑफिस की भी दो मंजिलें पूरी तरह जल गई। दोनों ही अख़बार प्रकाशित नहीं हो सके।

प्रथम आलो के सज्जाद शरीफ ने बताया, ''हमारे दो दफ्तरों में से एक को निशाना बनाया गया। बड़ी संख्या में लोग गेट के सामने आ गए थे, गेट बंद था लेकिन उन्होंने गेट पर हमला किया और तोड़फोड़ की। उस वक्त वहां कई कर्मचारी भी मौजूद थे, किसी तरह उन्हें वहां से सुरक्षित निकाला गया।''

उन्होंने कहा, ''27 सालों में पहली बार हुआ जब हमारा अख़बार आज प्रिंट नहीं हो सका और हम अपनी वेबसाइट में भी काम नहीं कर सके। हमारे बिजनेस ऑफिस में तोड़फोड़ हुई है, सब कुछ तबाह हो गया है।''

घटना के बाद मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार ने बयान जारी करते हुए घटना की निंदा की है और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की बात कही है।

महिला के जबरन धर्म परिवर्तन की खौफनाक कहानी

बिहार के सीमावर्ती क्षेत्र के अररिया जिला से एक महिला के जबरन धर्म परिवर्तन की खौफनाक कहानी सामने आई है। फारबिसगंज थाना क्षेत्र की रहने वाली एक महिला को अगवा कर तीन महीने तक कई इलाकों में बंधक बनाकर रखा गया। उसपर मतांतरण के लिए दबाव भी डाला गया। किसी तरह वह आरोपितों के चंगुल से बचकर घर पहुंची। जिसके बाद पति के साथ अररिया व्यवहार न्यायालय पहुंचकर 27 नवंबर को मुकदमा दायर किया। इस मामले में पीड़िता ने अररिया के ही नरपतगंज थाना क्षेत्र के मो. आलम सहित आठ लोगों पर गंभीर आरोप लगाए हैं।

पीड़िता के अनुसार, मो. आलम ने 25 अगस्त को उसे फोन पर झांसा दिया कि उसके पति ने बुलाया है। वह घर से निकली तो आलम उसे जबरन अपनी कार में बैठाकर सुपौल जिले के भीमपुर गांव ले गया। वहां कई दिन बंधक रखने के बाद उसे अररिया लाया गया, जहां उसके आधार कार्ड के साथ छेड़छाड़ की गई। आरोप लगाया कि आलम को दूसरे लोगों से उसे विदेश में बेचे जाने की बात करते हुए भी सुनी। इसके बाद उसे फिर भीमपुर और आलम के पैतृक गांव में कैद रखा गया।

आरोपितों के स्वजन उसे आपत्तिजनक खाद्य पदार्थ खाने को देते थे। वे लोग इसे कलमा और नमाज पढ़ने के लिए भी दबाव भी डालते थे। विरोध करने पर मारपीट की जाती थी। बाद में आलम उसे सहरसा से दिल्ली ले गया, जहां कई दिनों तक एक किराए के मकान में बंधक बनाकर रखा। जबरन उसके साथ सबंध बनाए गए और उसके बच्चे को जान से मारने की धमकी दी। उसके गहने भी रख लिए गए। महिला का कहना है कि सीमा क्षेत्र में ऐसे लोग सक्रिय हैं, जो जबरन धर्म परिवर्तन कराने के लिए काम करते हैं।

महिला किसी तरह आरोपियों के चंगुल से निकलकर अपने पति के साथ अररिया पहुंची और सीधे कोर्ट में परिवाद पत्र दायर किया।

राधा मोहन सिंह जी नहीं रहें

संस्कार भारती, बिहार प्रदेश के प्रथम संगठन मंत्री विश्व हिन्दु परिषद के पूर्व संगठन मंत्री एंव विद्या भारती के पूर्व प्रधानाध्यापक राधा मोहन सिंह जी नहीं रहे। आप बिहार में संस्कार भारती के संस्थापक सदस्यों में एक थे। 1942 में आपका जन्म आरा के कोइलवर के बंधु छपरा गांव में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा आरा में ही हुई। पढ़ाई के क्रम में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में जाना प्रारंभ हुआ। बाद में उन्होंने इसे ही अपना जीवन लक्ष्य बना लिया। 1966 से लगातार संगठन का दायित्व रहा। 1968 में संघ के प्रचारक बने तबसे अंतिम समय तक एक व्रती कार्यकर्ता के रूप में कार्य किया। 1968 से 1973 तक बतौर प्रचारक आरा और बक्सर में संघ कार्य के विस्तार के लिए लगातार सक्रिय रहे। 1973 से 1988 तक सरस्वती शिशु मंदिर योजना को पटना सहित पूरे बिहार में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निभाई। यह वह समय था जब शिशु मंदिर योजना बिहार में प्रारंभ ही हुई थी। प्रारंभिक काल में प्रांतीय कार्यालय प्रमुख रहे। बाद में जब पटना के कदमकुआं में शिशु मंदिर प्रारंभ हुआ तो उसके प्रथम प्रधानाचार्य बने। इसके बाद शिशु मंदिर, मुंगेर के प्रधानाचार्य बने।

बिहार में बांग्लादेशी घुसपैठ के खिलाफ 1981 में आंदोलन शुरू हुआ। किशनगंज घुसपैठियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण स्थान था। परंतु किशनगंज में संघ विचार परिवार की कोई गतिविधि खास नहीं थी। ऐसी स्थिति में वहां विद्या मंदिर प्रारंभ करने की योजना बनी। बालचंद अग्रवाल संघ के एक समर्पित कार्यकर्ता थे। उनके आग्रह पर विद्या भारती की योजना से इन्हें वहां भेजा गया। वहां उन्होंने विद्यालय प्रारंभ किया। 1983 से 1985 तक शिशु मंदिर के प्रथम प्रधानाचार्य के तौर पर कार्य किया। वहां विद्यालय के माध्यम से न सिर्फ शिक्षण बल्कि जन जागरण का भी कार्य किया। विद्या भारती के बाद संस्कार भारती का दायित्व आया। बिहार में कला साधकों के मध्य संस्कार भारती के कार्य विस्तार के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया।

इसके बाद 2008 से 2015 तक विश्व हिंदू परिषद के प्रांत संगठन मंत्री का भी कार्य किया। गिरते स्वास्थ्य और पारिवारिक दायित्वों के कारण वापस घर आ गए। वहीं एक विद्यालय प्रारंभ किया। 4 दिसंबर के सायं काल देवलोक के लिए प्रस्थान कर गए। कुछ वर्ष पूर्व दधीचि देहदान समिति में देहदान के लिए अपना संकल्प पत्र भरा था। इसलिए मरने के पश्चात संकल्प के अनुसार उनका पार्थिव शरीर 5 दिसंबर को इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आइजीआइएमएस) के एनाटॉमी विभाग को सौंप दिया गया। अस्पताल में उनके शरीर को प्राप्त करने के लिए बिहार के उपमुख्यमंत्री विजय सिन्हा, दधीचि देहदान समिति के अध्यक्ष एवं पूर्व राज्यपाल गंगा प्रसाद, महासचिव (पद्मश्री) विमल जैन, दीघा विधायक डॉ संजीव चौरसिया, डुमरांव विधायक राहुल कुमार सिंह, अस्पताल के उपनिदेशक डॉ विभूति प्रसन्न सिंह, एनाटॉमी के विभाग अध्यक्ष डॉ अवनीश कुमार, पूर्व विधान पार्षद हरेंद्र प्रताप समेत कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

RNI No.-BIHHIN/2003/12538 Postal Reg:R-10/NP-39/Patna GPO/23-25

तीन बार फेल, समाज का दबाव... फिर भी नहीं रुकी पूजा

बिहार के नालंदा जिले की दीप नगर बिहार शरीफ की रहने वाली पूजा कुमारी ने यह साबित कर दिखाया है कि अगर संकल्प दृढ़ हों तो राह की कोई भी अड़चन लक्ष्य तक पहुंचने से नहीं रोक सकती। किसान पिता धर्मदेव चौधरी और गृहिणी मां मीरा देवी की होनहार बेटी ने 67वीं बीपीएससी परीक्षा पास कर इतिहास रचा, जिसकी कहानी सभी परीक्षार्थियों के लिए प्रेरक है। पूजा रातों रात लाखों युवाओं, विशेषकर लड़कियों के लिए प्रेरणा बन गई।

पूजा के सपने बड़े थे

पूजा की शुरुआत एक साधारण सरकारी स्कूल से हुई। घर की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर थी कि कभी–कभी चूल्हा जलाने तक के लिए संसाधन नहीं होते थे। लेकिन ये सभी कष्ट भी पूजा के संकल्प को डिगा नहीं पाए। उन्होंने बिहारशरीफ से स्नातक की पढ़ाई पूरी की और फिर पटना जाकर बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) की तैयारी शुरू की। बीपीएससी की परीक्षा में लगातार तीन बार असफल होने के बाद भी पूजा ने हार नहीं मानी।

असफल होने पर वह लगातार समाज के तानों को सुनती रही। समाज के लोग बार–बार उससे पूछते थे कि कितनी बार फेल करोगी? अब तो शादी कर लो। इस सबके बीच पूजा ने अपना आत्मविश्वास बनाए रखा। उनके दोनों भाई, जो रेलवे में अधिकारी हैं, और उनके माता–पिता हर कदम पर साथ खड़े रहे। पूजा ने कहा, "मैं अकेली नहीं लड़ी, मेरे साथ मेरा परिवार लड़ा।"

शादी का दबाव पर सपना पहले

समाज जब शादी की जिद पर अड़ा था, तब पूजा का परिवार उनके सपनों के साथ था। पहले मंजिल, फिर शादी और हुआ भी ऐसा ही।

जब उन्होंने अपने जीवन का सबसे बड़ा सपना पूरा कर लिया तब जुलाई 2024 में पूजा की शादी फॉरेंसिक विभाग में कार्यरत सुनील कुमार से हुई। उनकी सफलता की यात्रा उन हजारों लड़कियों के लिए एक रौशनी की तरह है, जो सामाजिक दबाव और आर्थिक तंगी के बावजूद अपने सपनों की उड़ान भरना चाहती हैं। इससे पता चलता है कि अगर सपनों के पीछे जुनून हो और परिवार साथ हो तो कोई भी लड़की अपनी किस्मत खुद लिख सकती है।

डाक टिकट

पता